IJAER/ June-July 2012 /Volume-1/Issue-1/Article No-18/ 112-115 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

नायिका प्रधान उपन्यासों में नारी विमर्श

डॉ० प्रवेश सोती
शोध निर्देशिका
हिन्दी विभाग
सी०एम०जे० विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट ,मेघालय।

सुजीत कुमार शर्मा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
सी०एम०जे०विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट , मेघालय।

मानव जीवन की जितनी गहन व्यापक अभिव्यक्ति उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत की जा सकती है, उतनी साहित्य की किसी अन्य विधा में नहीं। उपन्यास साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में एक प्रौढ़ विधा के रूप में स्थान ग्रहण करने के साथ ही सर्वोत्कृष्ट स्थान पर प्रतिष्ठित भी हो चुका है। **'उपन्यास केवल मात्र कथात्मक गद्य नहीं है, वह मानव के जीवन का विशद चित्र है।'**

'ऐतिहासिक उपन्यासों का आकर्षण और साहित्यिक मूल्य बहुत कुछ उनके द्वारा किये गये विशिष्ट भू-भाग और काल विशेष के जीवन, रीति-नीति, रहन-सहन आदि के वर्णन पर निर्भर करता है। उनकी उत्तमता यहाँ पर वर्णनों की यथार्थता तद्रूपता और शक्ति पर निर्भर रहती है।'

यह सत्य ही परिलक्षित होता है कि वर्तमान क्षण-प्रतिक्षण अतीत बनता चला जाता है जो अतीत हो गया वह इतिहास बन जाता है। उपन्यास का मानव-जीवन के यथार्थ चित्रण के संदर्भ में ही नहीं, वरन् समाज के सापेक्ष चित्रण के संदर्भ में भी उसका अद्वितीय स्थान है। उपन्यास का मुख्य केन्द्र बिन्दु समाज से सम्बन्धित होता है। यही कारण है कि समाज के बहुविध धरातलों से सम्बन्धित होने के कारण ही व्यक्ति अनेक स्तरों पर विविधता धारण करता है। जहाँ एक ओर व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर उसका सामाजिक स्वरूप भी है।

साहित्य और समाज का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया, परन्तु यदि हम समाज को दृष्टिगत करना चाहते हैं तो उस समय के साहित्य का अवलोकन करने से ही समाज की स्थिति का ज्ञान हो जायेगा। ऐसे उपन्यासों का आधार सामाजिक विषय से ही सम्बन्धित होता है। यूँ तो सामाजिक उपन्यासों में समाज की रीतियों, परम्पराओं, नीतियों व अनेक साहित्यकारों ने व्यक्तिगत विचार भी प्रस्तुत किये और सुधर हेतु सुझाव भी दिये। इससे यह भी दृष्टिगत होता है कि पात्रों के लिये अधिकांशतः मध्य वर्ग को ही केन्द्र बनाया गया है।

सामाजिक उपन्यासों में उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक समस्याओं को चित्रित करने की ओर केन्द्रित रहता है। कथा सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द जी के उपन्यास सामाजिक समस्याओं को चित्रित करते हैं। भगवतीचरण वर्मा ने स्वयं को तटस्थ रखकर सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। 'चित्रलेखा, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, गोदान, गबन जैसे उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं पर विशेष रूप से केन्द्रित रही है।

'समाज की जीवन धारा को अवरूद्ध करने वाली जितनी भी रूढ़ियाँ, अन्धविश्वास और मान्यताएँ हैं, उन सब का निरूपण उपन्यासों में होता है। उपन्यास समाज और व्यक्ति के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है अतएव उसमें सामाजिकता का समावेश स्वयमेव हो जाता है और इसी कारण उपन्यास सामाजिक उपन्यास की संज्ञा प्राप्त कर लेता है।'

आंचलिक उपन्यासों में किसी अंचल विशेष की कथा को लेकर वहाँ के जन-जीवन का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए पात्रों में स्थानीय रंगत भरने का प्रयास किया जाता है।

'स्वतंत्रता के परवर्ती काल में ही हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यास शब्द का प्रयोग होता रहा है। संस्कृत शब्द कोष में अंचल से तात्पर्य वस्त्र के छोर से लिया गया लेकिन यह शब्द हिन्दी उपन्यासों से मेल नहीं रखता। बांग्ला और हिन्दी कोषों में संस्कृत अर्थ के अतिरिक्त एक और अर्थ भी दिया गया है- देश का एक भाग या प्रांत। अतः आंचलिक उपन्यास का सम्प्रेषित अर्थ है- 'विशेष भूमि' अंचल से सम्बन्ध उपन्यास अथवा अंचल विशेष का उपन्यास।'

'समाज की जीवन धारा को अवरूद्ध करने वाली जितनी भी रूढ़ियाँ, अन्धविश्वास और मान्यताएँ हैं, उन सब का निरूपण उपन्यासों में होता है। उपन्यास समाज और व्यक्ति के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है अतएव उसमें सामाजिकता का समावेश स्वयमेव हो जाता है और इसी कारण उपन्यास सामाजिक उपन्यास की संज्ञा प्राप्त कर लेता है।'

उपन्यास जीवन के लघुतम सरल और साधारण तथ्यों को भी पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास की विषय वस्तु के सम्बन्ध में रैल्फ फाक्स का कहना है- 'उपन्यास का विषय है व्यक्ति। यह समाज के विरूद्ध व्यक्ति के संघर्ष का महाकाव्य है और यह केवल उसी समय में विकसित हो सकता था जिसमें व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन नष्ट हो चुका हो और जिसमें मानव का सहजीवी, साथियों तथा प्रकृति से युद्ध ठना हो, पूँजीवादी समाज ऐसा ही समाज है।'यह सत्य है कि हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का विशद एवं व्यापक रूप में उल्लेख मिलता है। उपन्यासकारों ने नारी के क्रमिक विकास व नारी सम्बन्धी समस्याओं व नारी के बहुविध रूपों को उपन्यास में स्थान दिया, जो अग्रवर्णित है-

ऐतिहासिक उपन्यासों में नारियों का न तो कोई व्यक्तित्व अभिव्यंजित होता है और न ही उन्हें कोई महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सम्पूर्ण उपन्यासों में रीतिकाल जैसे प्रेम का प्रधान्य प्राप्त होता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में नारियाँ लेखकों के हाथ की कठपुतलियाँ मात्र प्रतीत होती हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण वत्तदावन लाल वर्मा व किशोरी लाल गोस्वामी जी के उपन्यासों में दृष्टिगत होता है। उनके उपन्यासों के नाम भी नारी के नाम पर हैं। लवंगलता में गोस्वामी जी ने नायिका के सौंदर्य का वर्णन हुए कहा है- 'लवंग के कपोल के सी गोलाई भूगोल में भी नहीं है। अधरोष्ठ के सी मिठाई अमृत में भी नहीं है, चिबुक की सी चमक चामीकर में भी नहीं है, देत पंक्ति की सी आभा मोती की लड़ी में भी नहीं है।'

अधिकांशतः उपन्यासों के पात्र नारी जीवन में प्रणय की प्रधानता को लेकर चले हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि नायिकायें प्रथम दर्शन में ही प्रेमिकायें बन जाती हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों को देखने से ऐसा दृष्टव्य है कि समस्त नारी चित्रणों में कुछ विशिष्ट समानताएँ देखने को मिलती हैं।

१. प्रायः सभी प्रेमिकायें हैं, वीर नारियाँ भी इस प्रेम रूपी जंतु की शिकार बनी हैं।
२. सभी नारियाँ अनन्य सुन्दर हैं, उनका सौन्दर्य ही संघर्षों का कारण बनता है।
३. दुष्ट नारी चरित्र अन्त में पराजित होते हैं और ऊँचे आदर्शों वाली नारियाँ विजय प्राप्त करती हैं।

तिलस्मी उपन्यासों में नारी के दो रूप मुख्य रूप से मिलते हैं। सती-साध्वी, वीरांगना का रूप, व द्वितीय कुलटा का रूप प्राप्त होता है। नारी का सुन्दर चित्रण इन उपन्यासों में दृष्टव्य होता है। एक ओर नारी का कोमल हृदय वाला रूप प्राप्त होता है, जो अनायास ही पाठकों के हृदय में बस जाती है और उन्हें आकर्षित करती है, तो दूसरी ओर नागिन की भाँति विष उगलती है। इन उपन्यासों में नारी के द्वारा ऐसे कार्यों की संभावना भी नहीं की जा सकती जो उन्होंने सहज रूप में ही सम्पन्न कर दिये हैं। इन उपन्यासों में नारी के उच्च विचारों को दृष्टिपात किया गया। उपन्यासकारों ने नारी के वासना आसक्तिमय रूप को चित्रित न करके अपितु शुद्ध प्रेम की प्रतिमा व मूर्ति के रूप में चित्रित किया है।

हिन्दी उपन्यास पर बांग्ला साहित्य का पूर्ण अभाव परिलक्षित होता है। गोस्वामी जी के उपन्यास **'कुसुम कुमारी', 'पणयिनी परिणय', 'लावण्यमयी'** इत्यादि में नारी पात्रों पर एक दृष्टि डालेंगे तो रीतिकाल के वासनामय श्रंगार काव्यों का प्रभाव दृष्टिगत होता है। यूँ तो गोस्वामी जी के उपन्यासों में नारी का आदर्श, स्त्री और पतिता का रूप माना गया है, लेकिन वहीं इसके प्रेम में चंचलता के भी दर्शन प्राप्त हुये। इनके मन में प्रेम की सरिता प्रवाहित होती रहती है।

नारी के सम्बन्ध में **बाबू ब्रज रत्न दास जी** कहते हैं- 'इनकी नायिकाओं में से एक भी कुलवधू के उच्च संयत तथा उच्च प्रेम को नहीं पहुँच सकी है। प्रत्युत ऐसा ज्ञात होता है कि वे वास्तविक प्रेम को जानती ही नहीं, उनमें यौवनकालीन अदमनीय तथा उच्छृंखलित वासनामय आसक्ति मात्र है, जो दूसरों को केवल आकर्षित कर सकती है। उनमें स्थायित्व नहीं हो सकता।'

सामाजिक उपन्यासकार ठाकुर जगमोहन सिंह जी ने नारी की निन्दा इतनी सज-धज कर की है कि रीतिकालीन बिहारी का नख-शिख वर्णन प्रतीत होता है।

''या जग नारी नैन के शरस की
बच रही बताओ आंखिन देखि

पिय घट विष यह सो मदिरा बोराओ।"

डा० लाल के मतानुसार- 'स्वच्छन्द और आदर्श प्रेम के उपसंहार स्वरूप यह निराशा का स्वर नारी निन्दा के रूप में प्रकट हुआ जो मध्यकालीन सन्तों की प्रतिध्वनि मात्र है।'

आंचलिक उपन्यासों से अभिप्राय है कि यह अंचल विशेष से सम्बन्धित होने के कारण इन उपन्यासों में ग्रामीण नारी को चित्रित किया गया। जिनका शैक्षिक ज्ञान कम होने के बावजूद भी वे कलाओं में पारंगत व निपुण है। ये नारियाँ प्रेम तो करती हैं लेकिन अपने चरित्र को पवित्र बनाने के लिए रीतिकालीन श्रृंगार युक्त प्रेम न रखकर वरन् स्वच्छन्द निर्मल व पवित्र प्रेम रखती हैं। आंचलिक उपन्यासों में आर्थिक अभावों से ग्रस्त नारी को भी चित्रित किया गया है। आंचलिक उपन्यास **'मैला आँचल'** में फणीश्वरनाथ रेणु ने नारी की दशा को स्पष्ट करते हुए लिखा है- 'अबला नारी हर जगह अबला ही है, रूप और जवानी नहीं, यह भी गलत औरत होनी चाहिये। रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं रह सकती।'

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी उपन्यास साहित्य का आरम्भ से ही नारी के प्रति विशेष प्रकार का दृष्टिकोण रहा। हिन्दी के लेखकों ने नारी को सम्मान देने का प्रयत्न अपने उपन्यासों में किया। फिर भी उनकी लेखनी की चपेट में उतनी सुस्पष्टता से चित्रित नहीं होती। कहीं वह सुखद प्रतीत होती है, तो कहीं वह अधूरी नजर में फँसी रहती है। इसलिए लेखक नारी के प्रति अपने हृदय से इतनी श्रद्धा व्यक्त नहीं कर पाये। यूँ तो कह सकते हैं कि नारी के जीवन विकास में हिन्दी उपन्यासकारों का श्रेष्ठ योगदान रहा है। नारी की सर्वांगीण प्रगति के दृश्य वर्तमान में हम देख रहे हैं। वे समस्त बातें उपन्यासों के कारण भी बहुत कुछ हमारे सामने आयी हैं। हिन्दी उपन्यासों में गौरव-गरिमा से मंडित नारी पात्रों के चित्रण ने हमारी भावनाओं को अनुप्रेरित किया है।

उपन्यास एक ऐसी उत्कृष्टतम विधा है, जिसमें मानव जीवन के यथार्थ पक्षों को चित्रित किया जाता है। यही कारण है कि उपन्यास में युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते परिप्रेक्ष्य में मानव जीवन का विस्तृत व वृहत चित्रण मिलता है। लेखक की व्यक्तिगत प्रतिक्रियायें, अनुभव एवं उनकी अनुभूतियाँ ही उपन्यास के मूल प्रेरक तत्व हैं जो समाज और परिवार के विभिन्न धरातलों पर हुये, उनके जीवन संघर्ष में जन्म लेती हैं।

उपन्यास के आधुनिक परिवेश पर नजर डालें तो आधुनिक प्रवृत्तियाँ उपन्यास साहित्य के विकसित रूप का बोधक हैं। आज हिन्दी उपन्यास साहित्य किसी सीमा तक अपने प्रारम्भिक स्वरूप से पृथक नवीनता लिए हुए है। यह लेखक के परिवर्तित दृष्टिकोण को दर्शाती है। इतना ही नहीं यह नवीनता उपन्यास के विकास की सूचक है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक का मन्तव्य परिवर्तित हो गया है, उपन्यास की मूल चेतना प्रत्येक परिवर्तन को स्वीकार करते हुए भी शाश्वत है।

जैसे-जैसे व्यक्ति और समाज में समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है। उसी प्रकार उपन्यास युग चेतना के अनुसार बदलते व्यक्ति और समाज की अभिव्यक्ति करेगा ही। आज अगर विकास क्रम पर दृष्टि डालते हैं तो बात वही पुरानी है, अन्तर केवल मूल्यांकन और प्रस्तुतिकरण में है।

अतः कह सकते हैं उपन्यास की रचना प्रक्रिया अत्यन्त सूक्ष्म व संश्लिष्ट है। उपन्यासकार अपने कथानक एवं पात्रों को अधिकांशतः सजीव रूप में प्रस्तुत करने के लिए समसामयिक जन-जीवन व समाज से ही उनका चयन करता है और फिर उन्हें अपने उपन्यास में अभिव्यक्त करता है। यह भी स्पष्ट है कि गद्य के आविर्भाव के साथ ही उपन्यास का भी साहित्य क्षेत्र में पदार्पण हुआ। उपन्यास कला की दृष्टि से उपन्यास की सफलता सिद्धी तब मानी जायेगी कि जब उपन्यासकार अपने अभीष्ट को जितनी प्रभावशीलता से व्यक्त करता है, कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि उपन्यासकार कुछ और कहता रहे और उपन्यास की घटना चरित्रावली कुछ और व्यंजित करे, जिससे उपन्यास का सारभूत प्रभाव कुंठित हो जाये। अतः उपन्यास मानव जीवन का चित्रण है, जो जीवन जगत के यथार्थ पक्ष को नये कलेवर में प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा- उपन्यास और लोक जीवन-रैल्फफाक्स, अनुवादक नरोत्तम सागरहिन्दी साहित्य कोष।
2. डा० शांति भारद्वाज- हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास प्रयोग।
3. डॉ० गोविन्द- हिन्दी उपन्यास - प्रेम और जीवन।
4. उमेश शास्त्री- हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास।
5. डॉ० त्रिभुवन सिंह- हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद।
6. नन्द दुलारे वाजपेयी- आधुनिक साहित्य।
7. डॉ० शैलजा तुलजाराम होटकर-हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण।
8. डॉ० सुभद्रा कुमारी चौहान- हिन्दी उपन्यास परम्परा और प्रयोग।